بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-08.12.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद के युद्ध पर रवानगी के समय पेश आने वाली घटनाओं का वर्णन। तथा फ़लिस्तीन के निर्दोष पीड़ितों के लिए दुआ की पुनः प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 08 दिसम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बः में ओहद के युद्ध के विषय में चर्चा हो रही थी उस हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने जो फ़रमाया है वह संक्षेप में बयान करता हूँ। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि काफ़िरों की सेना ने ओहद की लड़ाई के बाद मैदान से भागते हुए यह ऐलान किया कि अगले साल हम दोबारा मदीने पर हमला करेंगे तथा अपनी पराज्य का मुसलमानों से बदला लेंगे। अतः एक वर्ष के बाद वे फिर पूरी तय्यारी करके मदीने पर चढ़ आए। मक्के वालों के क्रोध का यह हाल था कि बदर के युद्ध के बाद उन्होंने यह ऐलान कर दिया था कि किसी व्यक्ति को अपने मुर्दों पर रोने की अनुमति नहीं तथा जो व्यवसायिक यात्री दल आएँगे उनका आगमन आगे होने वाले युद्ध के लिए सुरक्षित रखा जाएगा। अतएव बड़ी तय्यारी के बाद तीन हज़ार सैनिकों से अधिक संख्या की एक सेना अबू सुफ़यान के नेतृत्व में मदीने पर हमले के लिए आइ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबियों रज़ी. से विचार विमर्श किया कि क्या हमें नगरीय क्षेत्र में ठहर कर मुक़ाबला करना चाहिए अथवा बाहर निकल कर? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपना विचार यही था कि दुशमन को हमला करने दिया जाए ताकि युद्ध में पहल करने का भी वही ज़िम्मेदार हो तथा मुसलमान अपने घरों में बैठ कर उसका मुक़ाबला कर सकें। परन्तु व युवा मुस्लिम जो बदर के युद्ध में सम्मिलित न हो सके थे, तथा जिनके दिलों में ख़ुदा की राह में शहादत की अभिलाषा थी, उन्होंने यही इच्छा व्यक्त की, कि बाहर निकल कर मुक़ाबला किया जाए। उस अवसर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना एक सपना बयान किया, जिसके अनुसार आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने कुछ गांय देखीं जो कि ज़िब्ह की जा रही थीं। इसी तरह देखा कि आप स. की तलवार का सिरा टूट गया है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दृश्य भी देखा कि आप स. ने अपना हाथ सुदृढ़ एवं सुरक्षित कवच के भीतर डाला है तथा यह भी देखा कि आप स. एक मेंढे पर सवार हैं। सहाबा रज़ी. के पूछने पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन दृश्यों का स्वप्नफल बयान करते हुए फ़रमाया कि गायों के काटे जाने का स्वप्नफल तो यह है कि मेरे कुछ सहाबी इस युद्ध में शहीद होंगे। तलवार का सिरा टूटने का फल यह है कि मेरे प्रियजनों में से कोई विशेष अस्तित्व शहीद होगा अथवा इस अभियान में सम्भवतः मुझे की कोई कष्ट पहुंचे। कवच में हाथ डालने का स्वप्नफल यह है कि हमारा मदीने में ठहरना अधिक उचित है। मेंढे पर सवार होने का स्वप्नफल यह प्रतीत होता है कि काफ़िरों की सेना के सरदार पर हम ग़ालिब आएँगे। यद्यपि इस सपने के माध्यम से मुसलमानों पर यह स्पष्ट कर दिया गया था कि उनका मदीने में रहना अधिक सुरक्षा पूर्ण है किन्तु चूँकि सपने का स्वप्नफल रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपना था, इलहामी नहीं था, आपने अधिकांश लोगों के सुझाव को स्वीकार कर लिया तथा लड़ाई के लिए बाहर जाने का निर्णय कर दिया।

जब बाहर निकल कर युद्ध करने का निश्चय हो गया तो आप स. ने सहाबियों को तय्यारी करने का निर्देश दिया तथा आप स. स्वयं भी युद्ध की तय्यारी करने लगे। उस समय हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी. तथा हज़रत उसैद बिन हज़ीर रज़ी. ने लोगों से कहा कि तुम लोगों ने बाहर निकल कर लड़ने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आप स. की इच्छा के विरुद्ध विवश कर दिया है इस लिए अब भी इस निर्णय को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर छोड़ दो, आप स. जो भी फैसला फ़रमाएँगे उसमें ही हमारी भलाई होगी। जब आप स. बाहर तशरीफ़ लाए तो आप स. ने युद्ध का लिबास पहन रखा था। लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में अपना विचार पेश किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि नबी के लिए यह वैध नहीं कि हथ्यिार लगाने के बाद उस समय तक उन्हें उतारे जब तक अल्लाह उसके तथा उसके दुशमनों के बीच फैसला न फ़रमा दे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों के साथ रवाना होते हुए तीन भाले मंगवाए तथा उन पर तीन झंडे बांधे। औस नामक क़बीले का झंडा उसैद बिन हज़ीर रज़ी. को दिया, ख़िज़रज नामक क़बीले का झंडा अहबाब बिन मुंज़िर रज़ी. को दिया तथा मुहाजिरों का झंडा हज़रत अली रज़ी. को दिया। मदीने में शेष रह जाने वाले लोगों को नमाज़ पढ़ाने के लिए इब्ने उम्मे मकतूम को अपना नायब नियुक्त फ़रमाया। मुसलमानों की सेना में दो घोड़े तथा एक सौ कवच धारी यौद्धा थे।

रास्ते में यहूदियों का एक दल मुसलमानों की ओर से युद्ध में शामिल होने के लिए आया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों के मुक़ाबले पर यहूदियों की सहायता लेने से इंकार करते हुए उन्हें युद्ध में शामिल होने से रोक दिया। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पन्द्रह साल से कम आयु के युवाओं को युद्ध में शामिल होने से रोकते हुए उन्हें भी वापस भिजवा दिया।

इस्लाम की सेना ने जब रात को विश्राम किया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी. के नेतृत्व में पचास सिपाहियों को नियुक्त फ़रमाया जिन्होंने रात भर इस्लामी सेना के आस पास पहरा दिया।

अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल पहले तो साथ आया था किन्तु रास्ते से ही वापस चला गया था उसके वर्णन में लिखा है कि सहरी के समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शेख़न नामक स्थान से आगे की ओर रवाना हुए तथा मदीना एवं ओहद के बीच शौत नामक एक स्थान पर पहुंच कर नमाज़ का समय हो गया तथा उस स्थान पर आप स. ने फ़जर की नमाज़ अदा फ़रमाई। शौत नामक स्थान मदीना तथा कुनाह की घाटी के बीच एक स्थान का नाम है। उसी स्थान पर अब्दुल्लाह बिन सलूल मुनाफ़िक़ अपन साथियों सहित आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ छोड़ कर वापस हो गया। वापसी पर अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल ने कहा कि आपने मेरी बात नहीं मानी तथा लड़कों की बात मानी है, हम किस कारण अपनी जानें दें। अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल के साथ मुनाफ़िक़ों के लौट जाने के बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मौजूद सहाबियों की संख्या सात सौ रह गई। उस अवसर पर अन्सार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि मदीने के यहूदियों में से जो हमारे साथी एवं समर्थक हैं, क्यूँ न हम उनसे सहायता लें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमें उनकी सहायता की आवश्यकता नहीं है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद सहाबियों रज़ी. से विस्तार पूर्वक सम्बोधन फ़रमाया जिसमें मुसलमानों के लिए सम्पूर्ण कार्य-पद्यति थी कि किस प्रकार दीन पर अमल करना है। इस युद्ध में क़ुरैश के साथ बनी तिहामा नामक क़बीला तथा बनू कनाना नामक क़बीले भी शामिल हो गए तथा यूँ काफ़िरों की सेना तीन हज़ार की संख्या तक जा पहुची। काफ़िरों की पूरी सेना शस्त्रों के साथ तय्यार थी।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- इस युद्ध का विवरण इन्शाअल्लाह आगे बयान हो जाएगा। तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- फ़लिस्तीनियों के लिए मैं दुआओं के लिए कहता रहता हूँ, दुआएँ करते रहें। पिछले दिनों युद्ध विराम पूरा होने के बाद जैसा कि सम्भावना थी वही हो रहा है तथा इसराईल की सरकार पहले से बढ़ कर ग़ज़्ज़ा के इलाक़े में बम्बारी तथा हमले कर रही है, फिर निर्दोष बच्चे तथा निवासी शहीद हो रहे हैं। अब तो इस अत्याचार के विरुद्ध अमरीका के एक कांग्रेसी प्रतिनिधि ने भी जो सम्भवतः यहूदी हैं, यह कहा है कि अब बहुत हो गया है, अमरीका को इसे रोकने में अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए। अमरीका के सदर भी दबे दबे शब्दों में अब यह बयान दे रहे हैं कि यह गोला बारी अब बन्द होनी चाहिए जो उत्तर दक्षिण में समान रूप से हो रही है। पहले कहते थे उत्तर की ओर चले जाओ, कुछ नहीं होगा, अब वहाँ भी यही हाल है।

अतएव सदर साहब अमरीका के ये शब्द जो हैं, ये किसी मानव सहानुभूति के कारण नहीं हैं, किसी भ्रम में हमें नहीं रहना चाहिए बल्कि यह उनके अपने स्वार्थ के कारण हैं। ये सब कुछ अपने वोट लेने के लिए कर रहे हैं, इनको फ़लिस्तीनियों से अथवा मुसलमानों से कोई सहानुभूति नहीं।

फिर मुस्लिम देश हैं, तो उनकी आवाज़ में कुछ ज़ोर तो पैदा हो रहा है परन्तु जब तक एक होकर युद्ध को रोकने का प्रयास नहीं करेंगे कोई लाभ नहीं है। अल्लाह तआला मुसलमानों में एकता पैदा फ़रमाए। ग़ैर मुस्लिम दुनिया को पता है कि मुसलमानों में एकता नहीं है बल्कि मुसलमान मुसलमान को मारने तथा हत्या करने पर लगा हुआ है। यमन में क्या कुछ नहीं हो रहा, इसी तरह दूसरे देशों का हाल है। हज़ारों बच्चे तथा निर्दोष लोग मर रहे हैं मुसलमानों के हाथों, बल्कि लाखों हैं कुछ स्थानों पर तो, और यही बात ग़ैरों को साहस दे रही है कि इन पर अत्याचार भी करो तो कोई चिन्ता की बात नहीं, ये तो स्वयं अपने आप पर अत्याचार करते हैं। जब मुसलमानों को मुसलमानों की जान की चिन्ता नहीं तो दुश्मन फिर क्यूँ चिन्ता करेगा। अल्लाह तआला ने तो अति कठोर शब्दों में डराया है क़ुर्आन शरीफ़ में कि मुसलमान की मुसलमान हत्या करने पर जो डराया है वह यही है कि वे जहन्नमी होंगे। अल्लाह करे कि मुसलमान एक होकर दुनिया को अत्याचार से समाप्त करने का माध्यम बनें, न कि इसमें बढ़ने का।

यू.एन.ओ. ने अपनी आवाज़ में कुछ बुलन्दी पैदा करने का प्रयत्न किया है परन्तु उसकी आवाज़ को कौन सुनता है। कह तो यह देते हैं कि हम यह कर देंगे, वह कर देंगे परन्तु कुछ नहीं कर सकते। उनकी बात मानने वाला ही कोई नहीं। जो बड़ी शक्तियाँ हैं वे अपना अधिकार उपयोग कर लेती हैं। अल्लाह तआला मुसलमानों पर दया करे। अतएव पहले भी मैंने जमाआतों के द्वारा पैग़ाम भेजा हुआ है कि इस अत्याचार का रोकने एवं समाप्त करने के लिए हमें दुआ के साथ अपने निकटवर्ती दोस्तों तथा अपनी जमाअत के राजनीतिज्ञों को आवाज़ उठाने के लिए निरन्तर ध्यान दिलाते रहना चाहिए। इसी प्रकार अपने निकट के दोस्तों में यह बात फैलाएँ कि इस अत्याचार को समाप्त करने के लिए हमें चेष्टा करनी चाहिए। अल्लाह तआला निर्दोषों को इस अत्याचार से बचा ले।

अन्त में हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दो मृतकों मुकर्रमा मसऊदा बेगम साहिबा पतनी मुकर्रम मौलाना अब्दुल हकीम अकमल साहब मरहूम मुबल्लिग़ सिलसिला हॉलैंड और मास्टर अब्दुल मजीद साहब वाक़िफ़े ज़िन्दगी, अध्यापक तअलीमुल इस्लाम हाई स्कूल रबवा का सद्वर्णन करते हुए जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया और मग़फ़िरत एवं दर्जात की बुलन्दी के लिए दआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔